अध्याय – प्रथम

अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

1.0 प्रस्तावना – सांस्कृतिक गतिविधियाँ छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये छात्रों को स्थानीय और वैश्विक परंपराओं से जुड़ने, सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाने और रचनात्मकता को बढ़ावा देने में मदद करती हैं। पारंपरिक नृत्य प्रदर्शन और स्कूल की कला प्रदर्शनियाँ छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में रुचि पैदा करती हैं, और इसे केवल किताबें पढ़ने तक ही सीमित नहीं रखतीं, बल्कि उससे आगे ले जाती हैं। स्कूल के नेतृत्वकर्ता, शिक्षक और अभिभावक छात्रों के लिए सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्व को पहचानकर सीखने की प्रक्रिया को और अधिक रोचक बनाते हैं। इससे बच्चों को एक विविध और बहुआयामी दुनिया के लिए तैयार करने में मदद मिलेगी।

आर्नोल्ड के अनुसार– स्कूल में खेल को एक ऐसी गतिविधि के तौर पर देखा जाना चाहिए, जिसके अपने आंतरिक लक्ष्य और मानक हों, न कि एक ऐसी संस्थागत गतिविधि के तौर पर, जिसका ज्यादा ध्यान सत्ता, रुतबे और प्रतिष्ठा पर हो ।

खेलकूद दुनिया भर में शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा है, जो ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रो के माध्यमिक स्तर पर मौजूद है। पहले के अधिकांश समय से, खेल उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्रों और कर्मचारियों दोनों के लिए उच्च शिक्षा के अनुभव का एक हिस्सा रहा है। कई वर्षों तक, खेल पूरी तरह से मनोरंजन का साधन था या शारीरिक शिक्षा शिक्षकों को प्रशिक्षण देने से जुड़ा था। स्कूलों में, खेल प्रतियोगिताएं युवाओं के लिए आनंददायक और व्यवस्थित गतिविधियां प्रदान करती हैं। खेलकूद और शिक्षा के बीच एक सकारात्मक है। इस प्रकार, शारीरिक शिक्षा समग्र शिक्षा का एक अभिन्न अंग है, इसलिए शारीरिक शिक्षा छात्र की शिक्षा में एक अद्वितीय योगदान देती है। यह स्कूल में एकमात्र ऐसा विषय क्षेत्र है जो मानव गति के अध्ययन, शारीरिक गतिविधियों के कौशल को सीखने और फिटनेस को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। खेलकूद व्यक्ति के समग्र विकास से भी संबंधित है, जिसमें मनो–शारीरिक, संज्ञानात्मक (बौद्धिक) और भावात्मक (संवेगात्मक) क्षेत्रों में विकास शामिल है। मनो–शारीरिक, स्वस्थ्य, ज्ञान और आजीवन खेलों में भाग लेने के अनुकूल दृष्टिकोण का विकास करना

शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम का एक सर्वमान्य लक्ष्य है। इसके अतिरिक्त, खेलों में भाग लेना उच्च स्तर के आत्म–सम्मान और प्रेरणा, समग्र मनोवैज्ञानिक कल्याण, और लड़कियों के लिए बेहतर शारीरिक छवि से जुड़ा है।

1.1 ग्रामीण और शहरी क्षेत्रो में अवसरों की असमानता –ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद मे अवसरों की असमानता देखी गई है। भारत में शोध का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र हमेशा से ही ग्रामीण और शहरी परिवेश को अलग–अलग समझना रहा है। समाज में हमेशा से ही असमानता रही है। हालाँकि शहरीकरण बहुत तेजी से बढ़ रहा है, फिर भी आज भी भारत की लगभग 65ः आबादी ग्रामीण इलाकों में ही रहती है। शहरी और ग्रामीण इलाकों में मौजूद बुनियादी ढाँचे और नागरिक सुविधाओं के स्तर में बहुत बड़ा अंतर है। साथ ही साथ ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में भी असमानता हमेशा से ही एक दिलचस्प विषय रहा है। ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अवसरों की असमानता देने को मिलती है। अवसरों में यह अंतर जन्म स्थान, जाति, धर्म, लिंग, वगैरह जैसी विभिन्न परिस्थितियों के कारण हो सकता है। विकास सभी के लिए होना है चाहे उनकी जाति, धर्म, लिंग, गाँव हों या शहर हो।

1.2 सांस्कृतिक गतिविधियाँ– सांस्कृतिक गतिविधियाँ ऐसा कार्यक्रम और अभिव्यक्तियाँ हैं जो किसी समुदाय की परंपराओं और मूल्यों को दर्शाती हैं। न्छम्ब्ब् का सांख्यिकी संस्थान इन्हें सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के रूप में परिभाषित करता है, चाहे उनका कोई व्यावसायिक मूल्य हो या न हो। स्कूल, त्योहार, टैलेंट शो और वर्कशॉप, ये सभी विरासत और समावेशिता को बढ़ावा देते हैं। सांस्कृतिक गतिविधियों का अर्थ समझने से इस सवाल का जवाब मिलता है कि सांस्कृतिक गतिविधियाँ असल में क्या हैं। इससे यह भी पता चलता है कि दिवाली जैसे कार्यक्रम जिनमें रंगोली और नृत्य शामिल होते हैं। किस तरह सीखने, परंपरा और सामुदायिक भावना को बढ़ावा देते हैं।

1.3 खेलकूद की गतिविधियाँ – खेलकूद दुनिया भर में शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा है, जो ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रो के माध्यमिक स्तर पर मौजूद है। पहले के अधिकांश समय से, खेल उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्रों और कर्मचारियों दोनों के लिए उच्च शिक्षा के अनुभव का एक हिस्सा रहा है। कई वर्षों तक, खेल पूरी तरह से मनोरंजन का साधन था या शारीरिक शिक्षा शिक्षकों को प्रशिक्षण देने से जुड़ा था। स्कूलों में, खेल प्रतियोगिताएं युवाओं के लिए आनंददायक और व्यवस्थित

गतिविधियां प्रदान करती हैं। खेलकूद और शिक्षा के बीच एक सकारात्मक है। इस प्रकार, शारीरिक शिक्षा समग्र शिक्षा का एक अभिन्न अंग है, इसलिए शारीरिक शिक्षा छात्र की शिक्षा में एक अद्वितीय योगदान देती है।

1.4 खेलकूद की अनिवार्यता और लाभ–माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए खेल कूद अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यह उनके सर्वज्ञ विकास को बढ़ावा देता है। शारीरिक गतिविधि स्वास्थ्य में सुधार करती है। मजबूत मांसपेशियों का निर्माण करती है और मोटापे से लड़ने में सहायक होती है। मानसिक रूप से तनाव को काम करती है सामाजिक रूप से या टीमवर्क और नेतृत्व कौशल विकसित करती है। जिससे संज्ञानात्मक क्षमता और शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार होता है। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जिंदगी में खेलकूद बहुत अहमियत रखती है । खेलकूद को अकसर एक मजेदार गतिविधि या फिट रहने का तरीका माना जाता है परंतु खेलकूद के विद्यार्थियों की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक से जुड़े बहुत सारे पक्ष के लिए भी बहुत लाभ है । यह शारीरिक गतिविधि के लिए भी जरूरी है लेकिन कुछ विद्यार्थी पढ़ाई के कारण खेल को नजर अंदाज कर देते हैं जबकि पढ़ाई में भी खेलकूद की गतिविधियों का महत्वपूर्ण स्थान है । खेलकूद की गतिविधियों से बालकों को एक अच्छे इंसान के रूप में विकसित किया जा सकता है। खेलकूद माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के दिमाग को आराम देते हैं जो पढ़ाई के तनाव में डूबे रहते हैं उनके लिए यह बहुत ही लाभदायक है ।

1.5 सांस्कृतिक गतिविधिया एवं खेलकूद की भूमिका– छात्रों के लिए सांस्कृतिक गतिविधियाँ रचनात्मकता, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देती हैं। स्कूल, स्कूल के अंदर ही सांस्कृतिक गतिविधियों की एक सूची उपलब्ध करा सकते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम के कुछ बेसिक उददेश्य हैं–

- अलग–अलग स्किल वाले हर तरह के इंसान बनाना ।
- सेल्फ–कॉन्फिडेंस और क्रिएटिव प्रॉब्लम–सॉल्विंग को बढ़ावा देना ।
- अलग–अलग नजरियों के लिए एंपैथी और खुलेपन को बढ़ावा देना ।
- स्टूडेंट्स को जिंदगी के सभी एस्पेक्ट्स में सफल होने के लिए तैयार करना ।
- स्कूल में कल्चरल एक्टिविटीज कैसे ऑर्गनाइज करें ।

1.6 स्कूल में सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्व–

1. शैक्षिणक प्रदर्शन,बेहतर होती है ।
2. आत्मविश्वास और आत्म सम्मान को बढ़ता है।
3. समय प्रबंधन और प्रतिबद्धता को बढ़ावा देता है ।
4. छात्रवृति के मौके मिलते हैं ।
5. अलग–अलग कौशल विकास करता है ।
6. परंपराओं को बनाए रखता है और समुदाय की भागीदारी को बढ़ावा देता है ।
7. रचनात्मक अभिव्यक्ति को बेहतर बनाता है ।
8. आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।

1.7 अध्ययन की आवश्यकता– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का जीवन शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक बदलावों (किशोरावस्था) से गुजरता है। इस चरण में केवल किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं है। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस अध्ययन की हुई। यह अध्ययन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को समझने में मदद करता है। सांस्कृतिक गतिविधियाँ और खेलकूद ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, नेतृत्व क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य को निखारने के लिए अनिवार्य हैं। विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का आकलन के लिए यह अध्ययन आवश्यक है। इस अध्ययन के निष्कर्षों से शिक्षा विभागों, स्कूल प्रबंधनों और पाठ्यक्रम निर्माताओं को यह समझने में मदद मिलेगी। जिससे वे सह–शैक्षणिक गतिविधियो को केवल वैकल्पिक न रखकर अनिवार्य बनाएगें। अतः माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए नीति निमार्ण और मार्गदर्शन के लिए आवश्यकता है।

1.8 अध्ययन का शैक्षिक महत्व– इस अध्ययन का शैक्षिक महत्व अत्यधिक व्यापक है क्योंकि यह माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल अंक–केंद्रित व्यवस्था की ओर झुकी हुई है, जिससे विद्यार्थियों में मानसिक तनाव बढ़ रहा है। यह अध्ययन शिक्षाविदों और शिक्षकों को यह समझने में मदद करेगा कि सांस्कृतिक गतिविधियाँ और खेलकूद केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि ये संज्ञानात्मक

विकास और रचनात्मकता को बढ़ाने के अनिवार्य माध्यम हैं। इसके निष्कर्षों से पाठ्यक्रम निर्माताओं को खेल और संस्कृति को विद्यालयी समय–सारणी में मुख्य स्थान देने की प्रेरणा मिलेगी। इसके अतिरिक्त, यह शोध ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों की अलग–अलग कमियों और आवश्यकताओं को उजागर करेगा, जिससे नीति निर्माता दोनों परिवेशों के स्कूलों के लिए खेल सामग्री, मैदान और सांस्कृतिक संसाधनों का संतुलित आवंटन कर सकेंगे। अंततः, यह अध्ययन शिक्षकों और अभिभावकों की मानसिकता में बदलाव लाएगा, जिससे वे विद्यार्थियों को किताबी कीड़ा बनाने के बजाय उन्हें एक संतुलित, स्वस्थ और सामाजिक रूप से जागरूक नागरिक के रूप में विकसित करने में सहयोग दे सकेंगे।

अध्याय द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

2.0 प्रस्तावना – मनुष्य इस दुनिया की सर्वश्रष्ठ एवं अनुपम रचना है। विश्व के विकास में मनुष्य के मस्तिष्क का महत्वपूर्ण योगदान है। मनुष्य की इस अभूतपूर्व सफलता का रहस्य मनुष्य द्वारा अतीत के अनुभवों से सीख लेकर उनको आधार बना कर विकास के नए आयाम तय करना है। शिक्षा के क्षेत्र में भी यह बात लागू होती है। पूर्व में निर्धारित किये गए तथ्यों के आधार पर ही नवीन अनुसंधान होते है। अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधानकर्ता सम्बंधित साहित्य का अध्ययन पूर्व से संचित व लिखित ज्ञान के आधार पर ही भावी शोध करता है। इसलिए सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करना अनुसंधान का महत्वपूर्ण चरण है। अनुसंधान को करने से पहले अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या का चयन, परिकल्पना का निर्माण तथा अध्ययन की रुपरेखा का निर्माण करना पड़ता है।

''व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवो के अतिरिक्त, जो प्रत्येक पीढ़ी में नए सिरे से प्रारंभ करते है ,मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भंडार में मानव का निरंतर योगदान सभी क्षेत्रो में उसके विकास का आधार है।'' **–जॉन डब्ल्यू बेस्ट**

संबंधित शोध से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र –पत्रिकाओं , प्रकाशित एवं अप्रकाशित प्रबंधों एवं अभिलेख आदि से है। इसके अध्ययन से अनुसंधान कर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधान कर्ता का कार्य अंधेरे में तीर के समान होगा, जो अपने लक्ष्य तक बड़ी मुश्किल से पहुंच पाएगा। अतः संबंधित शोध के अध्ययन की पुनरावृत्ति से बचा जा सकता है। संबंधित शोध अध्ययन समय की भी बचत करता है और दिशा हीं श्रम से बचाकर अनुसंधान कर्ता को एक सही दिशा में ले जाता है । साथ–साथ अनुसन्धान कर्ता में आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है।

2.1 पूर्व में किए गए शोध कार्य का अध्ययन –

2.1.1 भारत में किए गए शोध कार्य का अध्ययन –

1.पाल, राहुल (2026)– 'विद्यार्थी जीवन में खेल का महत्व' निष्कर्षतः खेलों से छात्रों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य में काफी सुधार होता है, जो उनके समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं । शारीरिक फिटनेस में सुधार के अलावा, खेल खेलने से आत्म–नियंत्रण, सहयोग और समय प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल विकसित करने में मदद मिलती है। खेलों के फायदे खेल के मैदान से परे भी होते हैं क्योंकि वे तनाव को कम करते हैं, आत्म–सम्मान बढ़ाते हैं और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं , ये सभी अंततः शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार करते हैं। निष्पक्ष और समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने के लिए खेल भी महत्वपूर्ण हैं , जैसा कि शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकारी कार्यक्रमों से स्पष्ट होता है। खेलों में भाग लेने से छात्र सार्थक संबंध बना सकते हैं, अपनेपन की भावना महसूस कर सकते हैं और अपने भविष्य के करियर के लिए तैयार हो सकते हैं , जो खेलों को शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा बनाता है।

2.देबबर्मा सुपर्णा, शिला देवी लैशराम (2024) – 'शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के बीच शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन' शारीरिक शिक्षा मानव जीवन का मूलभूत पहलू है, जिसमें खेलकूद और शारीरिक फिटनेस शामिल हैं। इस अध्ययन में शारीरिक शिक्षा के महत्व और विद्यालयों में इसके प्रभाव को दर्शाया गया है। अध्ययन से यह पाया गया कि शहरी क्षेत्रों की छात्राओं का शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण ग्रामीण छात्राओं की तुलना में अधिक सकारात्मक है और त्रिपुरा के चयनित जिलों की शहरी और ग्रामीण छात्राओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण छात्राओं का दृष्टिकोण शहरी छात्राओं की तुलना में कम है।

3.मीर , मुदासिर अहमद और वानी मंजूर अहमद (2024) –''खाइयों को पाटनाः कश्मीर के ग्रामीण और शहरी सरकारी हाई स्कूलों के बीच खेल–कूद में भागीदारी की असमानताओं का विश्लेषण'' इस अध्ययन में कश्मीर के ग्रामीण और शहरी सरकारी हाई स्कूलों के बीच खेलों में भागीदारी और उपकरणों की उपलब्धता की तुलना करना हैं। नतीजों से पता चला कि शहरी स्कूलों की तुलना में ग्रामीण स्कूलों में खेलों में भागीदारी काफी ज्यादा थी। इसकी वजह ग्रामीण छात्रों में ज्यादा रुचि, ज्यादा सक्रिय जीवनशैली और ज्यादा खाली समय होना है।

4.फातिमा द्वारा (2024)– विद्यार्थियों के जीवन में खेल क्यों महत्वपूर्ण हैं, निष्कर्ष– शैक्षणिक अध्ययन और खेलकूद क्षमताएं एक दूसरे से परस्पर जुड़ी हुई हैं। ये एक ही सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं। सैद्धांतिक कक्षाओं के साथ–साथ खेलों की भी शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये व्यक्ति के व्यक्तित्व के समग्र निर्माण में योगदान देते हैं और उसके सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देते हैं। खेलों के शैक्षिक लाभ अनगिनत हैं और केवल शारीरिक लाभ तक ही सीमित नहीं हैं।

5.शर्मा, पवन कुमार (2023)– 'नियमित खेल–कूद गतिविधियों का विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में योगदान' यह शोध–पत्र विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में नियमित खेल–कूद गतिविधियों के योगदान का विश्लेषण करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि नियमित शारीरिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों की शारीरिक तंदुरुस्ती, सहनशक्ति, लचीलापन तथा रोग–प्रतिरोधक क्षमता को सुदृढ़ करती हैं, साथ ही मानसिक स्तर पर एकाग्रता, स्मरण शक्ति, आत्मविश्वास एवं भावनात्मक संतुलन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निष्कर्षः खेल–कूद गतिविधियाँ विद्यार्थियों में तनाव, चिंता एवं अवसाद को कम कर सकारात्मक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण करती हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, टीम–भावना, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन तथा सहयोगात्मक व्यवहार जैसे सामाजिक गुण भी विकसित होते हैं। अतः नियमित खेल–कूद गतिविधियाँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की आधारशिला के रूप में कार्य करती हैं और स्वस्थ, संतुलित तथा सक्षम व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध होती हैं।

2.1.2 विदेश में किए गए शोध कार्य का अध्ययन –

1.थाडियस याम्बेडोन आईडी एवं सहयोगी (.2025) – ''शहरी और ग्रामीण विद्यालयों में छात्र खेल संस्कृतिः पापुआ में एक तुलनात्मक अध्ययन'' इस अध्ययन का उद्देश्य पापुआ के शहरी और ग्रामीण स्कूलों के बीच छात्रों की खेल संस्कृति में अंतर ी जांच करना है, जिसमें शरीर के बारे में सांस्कृतिक धारणाओं, भागीदारी दरों और शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। परिणामों से पता चलता है कि शहरी छात्रों और शिक्षकों की शारीरिक शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक धारणाएं थीं, जिनके औसत अंक 4.2 और 4.5 थे, जबकि ग्रामीण स्कूलों में ये अंक 3.5 और 3.8 थे। ($t = 5.67$, $p < 0.001$)। दैनिक भागीदारी दर शहरी छात्रों (40%) में ग्रामीण छात्रों (20%) की तुलना में अधिक थी। शहरी छात्र मुख्य रूप से स्वास्थ्य लाभों (50%) से प्रेरित थे, जबकि ग्रामीण छात्र मनोरंजन और सामाजिक पहलुओं (40%) से प्रेरित थे।

2. जावेद अहमद गनई (.2025) – ''अनंतनाग जिले के ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की खेल–कूद में भागीदारी'' इस अध्ययन का उद्देश्यः–1. खेल और माध्यमिक स्कूल के पाठ्यक्रम के बीच के संबंध का पता लगाना। 2. छात्रों की भागीदारी के माध्यम से, खेलों और शारीरिक शिक्षा के बढ़ते विकास में माध्यमिक स्कूलों के योगदान को समझना। 3. माध्यमिक स्कूल के छात्रों में खेलों में हिस्सा लेने के प्रति नकारात्मकता या लगाव के कारणों को जानना।

3.कॉन्स्टेंटिनो पैपेजॉर्गिय एवं सहयोगी (2025) – ''समकालीन समाज की सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी और प्राथमिकताएँ'' इस अध्ययन का उद्देश्य यह अध्ययन समकालीन समाज में सांस्कृतिक भागीदारी और प्राथमिकताओं के स्वरूपों का पता लगाता है, जिसमें विभिन्न कारकों द्वारा सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी को प्रभावित करने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। परिणामों से पता चलता है कि सांस्कृतिक प्रचार में डिजिटल रणनीतियों के महत्व को उजागर करते हैं और सांस्कृतिक संस्थानों के लिए लक्षित दृष्टिकोण सुझाते हैं जिनका उद्देश्य समावेशिता को व्यापक बनाना है। ये अंतर्दृष्टियाँ सांस्कृतिक प्रबंधकों और नीति निर्माताओं के लिए मूल्यवान निहितार्थ प्रदान करती हैं जो सामुदायिक भागीदारी को बढ़ाना चाहते हैं और विभिन्न जनसंख्या वर्गों में निरंतर सांस्कृतिक रुचि को बढ़ावा देना चाहते हैं।

4. शिनलिंग तुओ (2024)– ''ग्रामीण बच्चों के खेल और सांस्कृतिक जीवन में बदलाव, ग्रामीण सुधार के नजरिए से'' इस लेख का उद्देश्य ग्रामीण पुनरुद्धार की पृष्ठभूमि में ग्रामीण बच्चों के खेल और सांस्कृतिक जीवन में आए बदलावों पर चर्चा करना है। है। रिसर्च से पता चलता है कि ग्रामीण बच्चों के स्पोर्ट्स के डेवलपमेंट में काफी तरक्की हुई है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे कि वेन्यू की कम सुविधाएं, कमजोर फैकल्टी, और स्पोर्ट्स और एजुकेशन का ठीक से इंटीग्रेशन नहीं होना।

2.2 शोध अंतराल– प्रस्तुत विषय ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन'' के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य और पूर्व अध्ययनों की समीक्षा करने पर यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्व पर व्यापक चर्चा की गई है। तथापि, वर्तमान शोधों में कई महत्वपूर्ण अंतराल दिखाई देते हैं। इसके अतिरिक्त, पूर्व अध्ययनों में अक्सर सामान्य निष्कर्ष निकाल दिए जाते हैं, जिससे ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों

(विशेषकर छात्राओं) की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और उनकी व्यक्तिगत रुचि के बीच के सूक्ष्म अंतर को नजरअंदाज कर दिया जाता है। सरकारी बनाम निजी स्कूलों के बुनियादी ढांचे में अंतर होने के कारण भी इस अनिवार्यता का प्रभाव दोनों क्षेत्रों में अलग–अलग पड़ता है, जिसे पिछले शोधों में गहराई से रेखांकित नहीं किया गया है। अतः यह अध्ययन ग्रामीण और शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच इन गतिविधियों की आवश्यकता, उपलब्धता और इनके मार्ग में आने वाली व्यावहारिक बाधाओं का एक समग्र व तुलनात्मक अध्ययन करके इसी वैचारिक और व्यावहारिक शोध अंतराल को भरने का एक सार्थक प्रयास करता है।

2.3 समस्या का कथन– किसी भी समस्या का चयन तथा उसका परिणाम विस्तृत क्षेत्र में सार्थकता एवं उपयुक्तता के आधार पर निश्चित किया जाता है। इस प्रकार किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से उसके व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवहार को जानना अत्यंत आवश्यक है। इन्ही कारको के कारण शोध समस्या के चयन के अंतर्गत ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर प्रभाव का अध्ययन कर उसको जानने का प्रयास किया गया है।

''ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन''

2.4 अध्ययन के उद्देश्य– किसी भी शोध अध्ययन को पूर्ण करने के लिए उससे संबंधित विशेष कारणों को निर्धारित करना महत्तवपूर्ण माना जाता है यही कारण शोध कार्यों के उद्देश्य कहलाते है। इसका स्वरूप सामान्य प्रकृति का होता है एवं यह प्रस्तावित शोध में मुख्य एवं सहायक भूमिका निभाता है

अतः प्रस्तुत शोध उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

- ग्रामीण और शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति रुचि का अध्ययन करना।

- ग्रामीण और शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की खेलकूद की अनिवार्यता पर दृष्टिकोण का का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं मे खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों का उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन करना।

2.5 अध्ययन की परिकल्पना– प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का उल्लेख किया गया है।

H_1 ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यार्थियों के बीच सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता मे कोई सार्थक अंतर पाया जाएगा।

H_2 ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यार्थियों के बीच खेलकूद की अनिवार्यता मे कोई सार्थक अंतर पाया जाएगा।

H_3 माध्यमिक स्तर के बालक और बालिका मे खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों का उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव मे सार्थक अंतर पाया जाएगा।

2.6 अध्ययन की परिसीमन – यह शोध छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले में 4 विद्यालय मे किए गए है। शोध के निष्कर्ष अन्य भौगोलिक क्षेत्रो में सामान्यीकरण संभवतः जटिल हो सकता है।

- शोधार्थी द्वारा यह शोध रायपुर जिले के अंर्तगत आने वाले विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए किया गया है जो अन्य जिले व विद्यालयों के लिए प्रभावित हो सकता है।
- इस शोध के लिए आकड़ो का संग्रहण वर्ष 2024–26 के बीच किया गया है जो अन्य वर्षो के लिए प्रभावित होगा।
- यह शोध 100 प्रशिक्षार्थियों 50 छात्र और 50 छात्राओं के ऊपर किया गया है, संख्या में परिवर्तित करने पर भिन्नता परिलक्षित हो सकता है।
- यह शोध 12–16 वर्ष की आयु सीमा वाले विद्यार्थियों पर किया गया है जो अन्य आयु सीमा वाले विद्यार्थियों पर करने से परिणामो में अंतर पाया जा सकता है।
- यह शोध कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों पर किया गया है। जो अन्य कक्षा वाले विद्यार्थियों पर करने से परिणामो में अंतर पाया जा सकता है।

- लघु शोध केवल खेल कूद की अनिवार्यता पर ही किया जाए, उन परिस्थितियों में भी अंतर पाया जाएगा ।
- यदि यह शोध बड़ी जनसंख्या के साथ किया जाए तब भी परिणाम में अंतर पाया जाएगा ।

2.7.5 समस्या का चर– किसी भी शोध अध्ययन में चर का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। चर वह है जिसका मान बदलता रहता है या चर को दूसरे शब्दों में परिभाषित करे तो वह वस्तु, घटना या चीज जिनके गुणों को मापा जा सकता है।।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न चरो को सम्मिलित किया गया है।

- **स्वतंत्र चर**– ग्रामीण और शहरी क्षेत्र और माध्यमिक स्तर
- **आश्रित चर**– सांस्कृतिक गतिविधियों और खेलकूद

2.8 प्रयुक्त पदों की परिचालन परिभाषा –

2.8.1 सांस्कृतिक गतिविधियाँ – सांस्कृतिक गतिविधियाँ ऐसा कार्यक्रम और अभिव्यक्तियाँ हैं जो किसी समुदाय की परंपराओं और मूल्यों को दर्शाती हैं।

2.8.2 खेलकूद की गतिविधियाँ – खेलकूद दुनिया भर में शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा है, कई वर्षों तक, खेल पूरी तरह से मनोरंजन का साधन था या शारीरिक शिक्षा शिक्षकों को प्रशिक्षण देने से जुड़ा था। खेलकूद और शिक्षा के बीच एक सकारात्मक है।

अध्याय तृतीय

अनुसंधान पद्धति

3.0 प्रस्तावना –अनुसंधान विधियाँ वे रणनीतियाँ, प्रक्रियाएँ या तकनीकें हैं जिनका उपयोग डेटा या साक्ष्य इकट्ठा करने और उनका विश्लेषण करने के लिए किया जाता है, ताकि नई जानकारी सामने लाई जा सके या किसी विषय की बेहतर समझ विकसित की जा सके। अनुसंधान विधियाँ कई प्रकार की होती हैं, जिनमें डेटा इकट्ठा करने के लिए अलग–अलग उपकरणों का इस्तेमाल किया जाता है। वैज्ञानिक विभिन्न अनुसंधान विधियों को अलग–अलग श्रेणियों में बाँटते हैं, जैसे – अवलोकन, प्रयोग, प्रश्नावली, साक्षात्कार, फोकस ग्रुप, केस स्टडी का उपयोग आदि। वर्तमान अनुसंधान में, अध्ययन की प्रकृति के अनुसार, डेटा इकट्ठा करने के लिए सर्वेक्षण विधि को सबसे उपयुक्त माना गया है।

3.1 शोध का प्रविधि – प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति पूर्णतः विवरणात्मक (Descriptive) है, जिसके अंतर्गत ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता के संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। इस शोध के लिए मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध को अधिक प्रामाणिक, उद्देश्यपूर्ण और केंद्रित बनाने के लिए डेटा संकलन के एकमात्र प्राथमिक स्रोत के रूप में एक स्वनिर्मित और संरचित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है।

इस विस्तृत जनसंख्या में से न्यादर्श या सैंपल का चयन करने के लिए 'यादृच्छिक प्रतिचयन पद्धति' का उपयोग किया गया है। शोध की व्यावहारिक सीमाओं को ध्यान में रखते हुए कुल विद्यार्थियों का एक निश्चित और प्रतिनिधि सैंपल 100 विद्यार्थी को चुना गया है। इस सैंपल में छात्र और छात्राओं दोनों की भागीदारी सुनिश्चित की गई है ताकि लिंग–आधारित व्यवहारिक अंतर का निष्पक्ष अध्ययन किया जा सके और स्वनिर्मित प्रश्नावली के परिणाम किसी एक वर्ग की ओर झुके हुए न हों।

3.2 शोध का अर्थ – अनुसंधान को वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करके किसी विशेष चिंता या समस्या से संबंधित अध्ययन पर सावधानीपूर्वक विचार करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है। अमेरिकी समाजशास्त्री अर्ल रॉबर्ट बैबी के अनुसार, ''अनुसंधान एक व्यवस्थित जाँच है, जिसका उद्देश्य देखे गए घटनाक्रमों का वर्णन करना, उनकी व्याख्या करना, उनके बारे में

भविष्यवाणी करना और उन्हें नियंत्रित करना होता है। इसमें आगमनात्मक और निगमनात्मक दोनों ही विधियाँ शामिल होती हैं।'' आगमनात्मक अनुसंधान विधियों के अंतर्गत किसी देखे गए घटनाक्रम का विश्लेषण किया जाता है, जबकि निगमनात्मक विधियों के अंतर्गत उस देखे गए घटनाक्रम की सत्यता की जाँच की जाती है। आगमनात्मक दृष्टिकोणों का संबंध गुणात्मक अनुसंधान से होता है, जबकि निगमनात्मक विधियों का संबंध आमतौर पर मात्रात्मक विश्लेषण से होता है।

3.3 शोध का अभिकल्प– प्रस्तुत शोध कार्य के लिए 'वर्णनात्मक एवं कारणात्मक–तुलनात्मक शोध अभिकल्प' का चयन किया गया है। यह अभिकल्प माध्यमिक स्तर के विद्यालयीन विद्यार्थियों के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र और माध्यमिक स्तर (स्वतंत्र चर) और सांस्कृतिक गतिविधियों और खेलकूद (आश्रित चर) के बीच के वर्तमान संबंधों और प्रभावों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने के लिए पूरी तरह उपयुक्त है। इस शोध अभिकल्प की रूपरेखा पूरी तरह से प्राथमिक आंकड़ों पर टिकी हुई है, जिसका संकलन करने के लिए 'स्वनिर्मित प्रश्नावली सर्वेक्षण' उपकरण बनाया गया है।

3.4 शोध विधि के चयन का आधार– सर्वेक्षण विधि के मूल तत्व को इस प्रकार समझाया जा सकता है: ''किसी एक या एक से अधिक विषयों पर व्यक्तियों से प्रश्न पूछना और फिर उनके द्वारा दिए गए उत्तरों का वर्णन करना।'' व्यावसायिक अध्ययनों के संदर्भ में, प्राथमिक डेटा इकट्ठा करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया जाता है।

3.5 शोध अध्ययन की विधि– प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्यों को प्राप्त करने और आंकड़ों के सटीक संकलन के लिए मुख्य रूप से 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है। यह विधि माध्यमिक स्तर के विद्यालयीन विद्यार्थियों के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर पड़ने वाले प्रभावों की वर्तमान स्थिति का हूबहू मूल्यांकन करने के लिए सबसे उपयुक्त है।

3.6 शोध पद्धति का महत्व – एक अनुसंधान पद्धति अनुसंधान को वैधता प्रदान करती है और वैज्ञानिक रूप से ठोस निष्कर्ष देती है। यह एक विस्तृत योजना भी प्रदान करती है जो शोधकर्ताओं को सही रास्ते पर रखने में मदद करती है, जिससे प्रक्रिया सुचारू, प्रभावी और प्रबंधनीय बन जाती है। अनुसंधान पद्धति यह समझाने का एक तरीका है कि एक शोधकर्ता अपना अनुसंधान कैसे करना चाहता है। यह किसी अनुसंधान समस्या को हल करने के लिए एक तार्किक, व्यवस्थित योजना है। एक पद्धति शोधकर्ता के अनुसंधान के दृष्टिकोण का विवरण देती है ताकि विश्वसनीय, वैध परिणाम सुनिश्चित किए जा सकें जो उनके लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करते हों।

3.7 जनसंख्या (Population)– एक अनुसंधान अध्ययन में प्रतिभागियों को सामूहिक रूप से 'जनसंख्या' के रूप में संदर्भित किया जाता है। यदि प्रतिभागियों को यादृच्छिक रूप से (randomly) चुना जाता है, तो अध्ययन के परिणामों को एक बड़ी जनसंख्या का प्रतिनिधि माना जा सकता है। जनसंख्या मे माध्यमिक स्तर (कक्षा 6वीं से 8वीं) के विद्यार्थी।

तालिका क्रमांक –3.1

शोध अध्ययन के समग्र की विवरण तालिका

क्रमांक	विद्यालय के नाम		बालक	बालिका	कुलयोग
1.	शहरी	शासकीय बालक पूर्व माध्यमिक शाला, मंदिर हसौद	25	–	25
2.		शासकीय कन्या पूर्व माध्यमिक शाला, मंदिर हसौद	–	25	25
3.	ग्रामीण	शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, रीको	13	12	25
4.		शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, बरौदा	12	13	25
योग			50	50	100

3.8 न्यादर्श एवं न्यादर्श विधि– अनुसंधान की भाषा में, एक नमूना लोगों, वस्तुओं का एक समूह होता है जिसे मापन के उद्देश्य से एक बड़ी जनसंख्या से लिया जाता है। नमूना जनसंख्या का प्रतिनिधि होना चाहिए,। एक नमूने को डेटा के एक छोटे समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे एक शोधकर्ता एक पूर्व–निर्धारित चयन पद्धति का उपयोग करके एक बड़ी जनसंख्या से चुनता है। ज्यादातर मामलों में, पूरी आबादी पर अनुसंधान करना असंभव होता है, या फिर यह बहुत महंगा और समय लेने वाला काम होता है। प्रस्तुत अध्ययन में, रायपुर जिले के निजी विद्यालय का चयन' ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से सरल यादृच्छिक' विधि की सहायता से किया गया है।

3.9 उपकरण का चयन– डेटा इकट्ठा करने और उसका विश्लेषण करने के लिए कई अलग–अलग तरीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है। ज्यादातर तरीके बुनियादी उपकरणों के एक मुख्य समूह पर आधारित होते हैं। इनमें इंटरव्यू, फोकस ग्रुप चर्चा, अवलोकन, फोटोग्राफी, वीडियो, सर्वेक्षण, प्रश्नावली और केस स्टडी शामिल हैं। इस अध्ययन में, डेटा इकट्ठा करने के लिए

चुने गए चरों पर, विषय विशेषज्ञों की मदद से शोधकर्ता द्वारा एक स्वयं–निर्मित प्रश्नावली तैयार की गई है।

3.10 उपकरण का प्रशासन–यह प्रश्नावली महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। शोधकर्ता इसे लागू करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें । प्रशासकीय प्रक्रिया का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि डेटा बिना किसी पक्षपात के और बिल्कुल सटीक तरीके से इकट्ठा किया जा सके।

3.10.1 निर्देश – यह प्रश्नावली विद्यालयीन विद्यार्थियों के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन करने के लिए तैयार की गई है। नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। कृपया प्रत्येक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी वास्तविक राय के अनुसार दिए गए 5 विकल्पों में से किसी एक पर सही (✓) का निशान लगाएं। इसमें कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है, आपकी व्यक्तिगत राय ही महत्वपूर्ण है। आपके द्वारा दी गई सभी जानकारी पूर्णतःगुप्त रखी जाएगी और इसका उपयोग केवल शैक्षणिक अनुसंधान के लिए ही किया जाएगा। कृपया किसी भी कथन को बिना टिक किए न छोड़ें। सभी 15 प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

- माध्यम (Mode): आफ लाइन प्रिंटेड पेपर (Offline) पर भरवा सकते हैं।

3.11 समंक संग्रहण की कार्यविधि– डेटा इकट्ठा करने को अनुसंधान के लिए मानक, मान्य तकनीकों का उपयोग करके सटीक जानकारी इकट्ठा करने, मापने और उसका विश्लेषण करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है। एक शोधकर्ता इकट्ठा किए गए डेटा के आधार पर अपनी परिकल्पना का मूल्यांकन कर सकता है। प्राथमिक डेटा इकट्ठा करने की विधियों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता हैः मात्रात्मक विधियाँ और गुणात्मक विधियाँ। इस अध्ययन में, स्वयं–निर्मित प्रश्नावली की मदद से ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर विद्यार्थीयो से डेटा इकट्ठा किया जाएगा।

डेटा प्राथमिक और साथ ही माध्यमिक स्रोतों से एकत्र किया गया था। प्राथमिक डेटा एक सुव्यवस्थित प्रश्नावली की मदद से एकत्र किया गया था। यह अध्ययन रायपुर जिले ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन पर की जांच करने के लिए मिश्रित–पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करता है। माध्यमिक डेटा

पिछले अध्ययनों, इंटरनेट, विभिन्न पुस्तकालयों आदि से एकत्र किया गया था। एक प्रश्नावली तैयार की गई थी और 100 छात्रों के नमूना आकार से डेटा एकत्र किया गया था। इस शोध विषय ''**ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन का अध्ययन''** मे शोध प्राविधि के रूप मे ''सर्वेक्षण विधि'' सबसे उपयुक्त होती है। डेटा इकट्ठा करने के लिए आप प्रश्नावली का उपयोग किया गया हैं।

3.12 शोध मे प्रयुक्त सांख्यिकीय– किसी अध्ययन को पूरा करने में शामिल सांख्यिकीय विधियों में योजना बनाना, डिजाइन तैयार करना, डेटा इकट्ठा करना, विश्लेषण करना, सार्थक व्याख्या करना और अनुसंधान निष्कर्षों की रिपोर्ट तैयार करना शामिल है। इस अध्ययन में, परिणाम निकालने के लिए प्राप्त डेटा का सांख्यिकीय रूप से विश्लेषण किया गया है, जिसमें मध्यमान, प्रमाप विचलन, काई स्कवायर परीक्षण और टी परीक्षण आदि सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है।

वर्तमान अध्ययन में, ''ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन '' से संबंधित है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन, काई स्कवायर परीक्षण और टी परीक्षण आदि सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है और उनके आधार पर निष्कर्ष निकाले गए हैं।

मध्यमान –रमन बिहारी लाल के अनुसार – मध्यमान किसी समूह के प्राप्तांक का औसत मान होता है। जिसमे दोनों ओर के प्राप्तांको का विचलन समान होता है।

$$\text{मध्यमान } M = \frac{\Sigma X}{N}$$

M = मध्यमान

N= प्राप्तांको की कुल संख्या

ΣX = कुल प्राप्तांक

मानक विचलन – डॉ. राजेंद्र जोशी के अनुसार – किसी समूह के मध्यमान से प्राप्तांको के विचलनों के वर्ग के औसत के वर्गमूल को मानक विचलन कहते है।

मानक विचलन S.D= $\left[\frac{\Sigma x^2}{N} - \frac{\Sigma x^2}{N}\right]$

Σx = प्राप्तांको का योग

N = प्राप्तांको की संख्या

काई स्कवायर परीक्षण – काई–स्क्वायर परीक्षण एक सांख्यिकीय पद्धति है। यह दो श्रेणियों वाले डेटा के बीच संबंध या अंतर का पता लगाता है। यह दो वेरिएबल्स एक–दूसरे से स्वतंत्र हैं या उनके बीच कोई गहरा संबंध है को जांचने के लिए किया जाता है।

काई–स्क्वायर $X^2 = \frac{\Sigma (o - E)^2}{E}$

X = काई–स्क्वायर का मान

Σ = योग

O = वास्तविक आवृति

E = अपेक्षित आवृति

टी परीक्षण – T-test दो माध्यों (mean) के बीच के अंतर को निर्धारित करने का अंतिम सांख्यिकीय माप है। ये माध्य आपस में संबंधित हो भी सकते हैं और नहीं भी। इस परीक्षण में, दोनों श्रेणियों या समूहों से यादृच्छिक रूप से चुने गए नमूनों का उपयोग किया जाता है। यह एक सांख्यिकीय विधि है, जिसमें नमूने यादृच्छिक ढंग से चुने जाते हैं, और इसमें कोई पूर्ण सामान्य वितरण (Perfect normal distribution) नहीं होता है। जिसमें नमूनों का चयन यादृच्छिक रूप से किया जाता है। और इसमें कोई पूर्ण सामान्य वितरण नहीं होता है। किए जाने वाले टी–टेस्ट का प्रकार इस बात पर निर्भर करता है कि विश्लेषण किए जाने वाले नमूने एक ही

श्रेणी के हैं या अलग–अलग श्रेणियों के। इस प्रक्रिया में प्राप्त निष्कर्ष माध्य अंतरों के संयोगवश होने की संभावना को दर्शाता है। यह परीक्षण सोशल मीडिया उपयोग एवं सामाजिक व्यवहार आदि की तुलना करने में उपयोगी है। इस प्रकार के परिकल्पना परीक्षण के लिए उपयोग किया जाने वाला मापन पैमाना सतत या क्रमसूचक पैटर्न के एक समूह का अनुसरण करता है। ये परीक्षण पूरी तरह से यादृच्छिक नमूनाकरण पर आधारित होते हैं। चूंकि नमूनों में कोई व्यक्तिगतता नहीं होती है, इसलिए इसकी विश्वसनीयता पर अकसर सवाल उठाया जाता है।

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{(SD_1/N_1)^2 - (SD_2/N_2)^2}}$$

- M_1= प्रथम समूह का मध्यमान
- M_2 = द्वितीय समूह का मध्यमान
- SD_1 = प्रथम समूह का मानक विचलन
- SD_2 = द्वितीय समूह का मानक विचलन
- N_1 = द्वितीय समूह के बालको की कुल संख्या
- N_2 = प्रथम समूह के बालको की कुल संख्या

अध्याय –चतुर्थ

आंकड़ों का विश्लेषण

4.0 प्रस्तावना – शिक्षा के क्षेत्र में मापन अचानक से अस्तित्व में नहीं आया। किसी भी शोध जांच को शुरू करने का तार्किक तरीका यह है कि एक परिकल्पना से शुरुआत की जाए, ताकि डेटा का एक उपयुक्त नमूना प्राप्त किया जा सके और उस परिकल्पना के निहितार्थों का परीक्षण किया जा सके। यह परिकल्पना एक सामान्य प्रस्ताव के रूप में हो सकती है, या फिर यह कोई विशिष्ट प्रश्न भी हो सकता है। आमतौर पर एक विशिष्ट परिकल्पना को सामान्य परिकल्पना की तुलना में अधिक प्राथमिकता दी जाती हैय क्योंकि शोध–प्रबंध जितना अधिक निश्चित और सटीक होगा, किसी निर्णायक उत्तर के मिलने की संभावना उतनी ही अधिक होगी। कोई भी अध्ययन उस डेटा से बेहतर नहीं हो सकता जिस पर वह आधारित है। और उस डेटा की जो व्याख्या की जाती है, वह काफी हद तक पहले से स्थापित निष्कर्षों के प्रकाश में की गई व्याख्या और निष्कर्षों पर ही निर्भर करती है। शोध–प्रबंध का यह अध्याय ''ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन'' पर प्रभाव से संबंधित परिणामों, उनकी व्याख्या और उन पर की गई चर्चा पर केंद्रित है।

4.1 सारणीयन– सारणीयन से तात्पर्य आंकड़ों को पंक्तियों (rows) और स्तंभों (columns) में व्यवस्थित तथा तार्किक रूप से प्रस्तुत करने से है, ताकि उनकी तुलना करना और उनका सांख्यिकीय विश्लेषण करना सुगम हो सके। यह संबंधित जानकारियों को एक–दूसरे के निकट लाकर तुलना करने की प्रक्रिया को सरल बनाता है, और साथ ही सांख्यिकीय शोध तथा व्याख्या के कार्यों में भी सहायक सिद्ध होता है। एक बार सत्यापित और वर्गीकृत हो जाने के पश्चात्, सांख्यिकीय सामग्री को सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार, वर्गीकरण की प्रक्रिया ही सारणीयन का मुख्य आधार है। जिस प्रकार का वर्गीकरण किया जाता है, ठीक उसी प्रकार का सारणीयन भी संपन्न होता है। यदि वर्गीकरण अत्यंत व्यापक और जटिल प्रकृति का है, तो तदनुरूप ही सारणीयन भी जटिल रूप धारण कर लेगा। अतः, तथ्यों को क्रमिक रूप से व्यवस्थित करने हेतु सारणी की विभिन्न पंक्तियों और स्तंभों का उपयोग करना ही 'सारणीयन' कहलाता है।

4.2 आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

अ. सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता और प्रभाव (Cultural Activities)

Q1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक विकास के लिए सांस्कृतिक गतिविधियाँ (जैसे– नाटक, संगीत, नृत्य) अनिवार्य होनी चाहिए।

सारणी 4.1 : अध्ययन में सम्मिलित प्रतिभागियों का लिंग आधारित वितरण

लिंग Q1	Cases					
	Valid		Missing		Total	
	N	Percent	N	Percent	N	Percent
	100	100%	1	0.0%	101	100.0%

सारणी 4.2 : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक विकास के लिए सांस्कृतिक गतिविधियाँ अनिवार्य होने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

Q1			तटस्थ	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	2	9	39	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.0	8.5	36.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	4.0%	18.0%	78.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q1	20.0%	52.9%	53.4%	50.0%
		कुल प्रतिशत	2.0%	9.0%	39.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	8	8	34	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.0	8.5	36.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	16.0%	16.0%	68.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q1	80.0%	47.1%	46.6%	50.0%
		कुल प्रतिशत	8.0%	8.0%	34.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	10	17	73	100
		अपेक्षित आवृत्ति	10.0	17.0	73.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	17.0%	73.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q1	100.0%	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	10.0%	17.0%	73.0%	100.0%

व्याख्या –सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 8 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 34 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक विकास के लिए सांस्कृतिक गतिविधियाँ (जैसे–नाटक, संगीत, नृत्य) अनिवार्य होनी चाहिऐ। वहीं 8 विद्यार्थियों ने "**तटस्थ**" श्रेणी का चयन किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कुछ विद्यार्थी इस प्रभाव को मध्यम स्तर तक अनुभव करते हैं।

बालक विद्यार्थियों में 9 ने "**सहमत**" तथा 29 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक विकास के लिए सांस्कृतिक गतिविधियाँ (जैसे– नाटक, संगीत, नृत्य) अनिवार्य करने वाला माध्यम मानता है। दूसरी ओर बालक विद्यार्थी में 9 ने ""**सहमत**" तथा 29 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो बालिका विद्यार्थियों की तुलना में थोड़ा अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 4.001 तथा p-value 0.135 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक विकास के लिए सांस्कृतिक गतिविधियाँ (जैसे– नाटक, संगीत, नृत्य) अनिवार्य बनाए रखने एवं सुदृढ़ करने में प्रभावी भूमिका निभा रहा है।

Q2. सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने से विद्यार्थियों का स्टेज फियर (मंच का डर) दूर होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है।

सारणी 4.3: सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने से विद्यार्थियों का मंच का डर दूर होने और आत्मविश्वास बढ़ने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

Q2			सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	20	30	50
		अपेक्षित आवृत्ति	20.5	29.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	40.0%	60.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q2	48.8%	50.8%	50.0%
		कुल प्रतिशत	20.0%	30.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	21	29	50
		अपेक्षित आवृत्ति	20.5	29.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	42.0%	58.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q2	51.2%	49.2%	50.0%
		कुल प्रतिशत	21.0%	29.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	41	59	100
		अपेक्षित आवृत्ति	41.0	59.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	41.0%	59.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q2	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	41.0%	59.0%	100.0%

व्याख्या –सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 21 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 29 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने से विद्यार्थियों का मंच का डर दूर होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है।

बालक विद्यार्थियों में 20 ने "**सहमत**" तथा 20 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने से विद्यार्थियों का मंच का डर दूर होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। दूसरी ओर बालिक विद्यार्थी में 21 ने ""**सहमत**" तथा 29 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो बालक विद्यार्थियों की तुलना में थोड़ा अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान .041 तथा p-value 0.839 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने से विद्यार्थियों का मंच का डर दूर होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है।

Q3. ग्रामीण क्षेत्रों के मुकाबले शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को सांस्कृतिक गतिविधियों के अधिक अवसर मिलते हैं।

सारणी 4.4 : ग्रामीण क्षेत्रों के मुकाबले शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को सांस्कृतिक गतिविधियों के अधिक अवसर मिलने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

			सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	25	25	50
		अपेक्षित आवृत्ति	23.0	27.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	50.0%	50.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q3	54.3%	46.3%	50.0%
		कुल प्रतिशत	25.0%	25.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	21	29	50
		अपेक्षित आवृत्ति	23.0	27.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	42.0%	58.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q3	45.7%	53.7%	50.0%
		कुल प्रतिशत	21.0%	29.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	46	54	100
		अपेक्षित आवृत्ति	46.0	54.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	46.0%	54.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q3	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	46.0%	54.0%	100.0%

व्याख्या –सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 21 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 29 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के मुकाबले शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को सांस्कृतिक गतिविधियों के अधिक अवसर मिलते हैं।

बालक विद्यार्थियों में 25 ने "**सहमत**" तथा 25 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है ग्रामीण क्षेत्रों के मुकाबले शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को सांस्कृतिक गतिविधियों के अधिक अवसर मिलते हैं। दूसरी ओर बालिक विद्यार्थी में 21 ने ""**सहमत**" तथा 29 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो बालक विद्यार्थियों की तुलना में थोड़ा अधिक सकारात्मक

दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 4.001 तथा p-value 0.135 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है ग्रामीण क्षेत्रों के मुकाबले शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को सांस्कृतिक गतिविधियों के अधिक अवसर मिलते हैं।

Q4. पढ़ाई के बढ़ते दबाव के कारण सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए अलग से समय निकालना मुश्किल होता है।

सारणी 4.5 : पढ़ाई के बढ़ते दबाव के कारण सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए अलग से समय निकालना मुश्किल होने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

Q4			तटस्थ	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	10	20	20	50
		अपेक्षित आवृत्ति	8.0	21.5	20.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	20.0%	40.0%	40.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q4	62.5%	46.5%	48.8%	50.0%
		कुल प्रतिशत	10.0%	20.0%	20.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	6	23	21	50
		अपेक्षित आवृत्ति	8.0	21.5	20.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	12.0%	46.0%	42.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q4	37.5%	53.5%	51.2%	50.0%
		कुल प्रतिशत	6.0%	23.0%	21.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	16	43	41	100
		अपेक्षित आवृत्ति	16.0	43.0	41.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	16.0%	43.0%	41.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q4	100.0%	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	16.0%	43.0%	41.0%	100.0%

व्याख्या –सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 8 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 34 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है पढ़ाई के बढ़ते दबाव के कारण सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए अलग से समय निकालना मुश्किल होता है।

बालक विद्यार्थियों में 23 ने "**सहमत**" तथा 21 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है पढ़ाई के बढ़ते दबाव के कारण सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए अलग से समय निकालना मुश्किल होता है। वहीं 6 बालक विद्यार्थी ने "**तटस्थ**" श्रेणी का चयन किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कुछ विद्यार्थी इस प्रभाव को मध्यम स्तर तक अनुभव करते हैं।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 1.234 तथा p-value 0.540 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है पढ़ाई के बढ़ते दबाव के कारण सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए अलग से समय निकालना मुश्किल होता है।

Q5. विद्यालयों में सांस्कृतिक गतिविधियों को केवल उत्सवों तक सीमित न रखकर पाठ्यक्रम का नियमित हिस्सा बनाना चाहिए।

सारणी 4.6 : विद्यालयों में सांस्कृतिक गतिविधियों को केवल उत्सवों तक सीमित न रखकर पाठ्यक्रम का नियमित हिस्सा बनाना के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

Q5			तटस्थ	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	5	30	15	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.5	29.0	15.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	60.0%	30.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q5	45.5%	51.7%	48.4%	50.0%
		कुल प्रतिशत	5.0%	30.0%	15.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	6	28	16	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.5	29.0	15.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	12.0%	56.0%	32.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q5	54.5%	48.3%	51.6%	50.0%
		कुल प्रतिशत	6.0%	28.0%	16.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	11	58	31	100
		अपेक्षित आवृत्ति	11.0	58.0	31.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	11.0%	58.0%	31.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q5	100.0%	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	11.0%	58.0%	31.0%	100.0%

व्याख्या –सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 30 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 15 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है विद्यालयों में सांस्कृतिक गतिविधियों को केवल उत्सवों तक सीमित न रखकर पाठ्यक्रम का नियमित हिस्सा बनाना चाहिए। वहीं 5 विद्यार्थियों ने "**तटस्थ**" श्रेणी का चयन किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कुछ विद्यार्थी इस प्रभाव को मध्यम स्तर तक अनुभव करते हैं।

बालक विद्यार्थियों में 28 ने "**सहमत**" तथा 16 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है विद्यालयों में सांस्कृतिक गतिविधियों को केवल उत्सवों तक सीमित न रखकर पाठ्यक्रम का नियमित हिस्सा बनाना चाहिए। वहीं 6 विद्यार्थियों ने "**तटस्थ**" श्रेणी का चयन किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कुछ विद्यार्थी इस प्रभाव को मध्यम स्तर तक अनुभव करते हैं।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान .194 तथा p-value 0.908 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयों में सांस्कृतिक गतिविधियों को केवल उत्सवों तक सीमित न रखकर पाठ्यक्रम का नियमित हिस्सा बनाना चाहिए।

Q6. माध्यमिक स्तर पर हर विद्यार्थी के लिए रोजाना कम से कम एक घंटा खेलकूद अनिवार्य होना चाहिए।

सारणी 4.7 : माध्यमिक स्तर पर हर विद्यार्थी के लिए रोजाना कम से कम एक घंटा खेलकूद अनिवार्य होने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

Q6			तटस्थ	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	5	15	30	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.0	16.0	29.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	30.0%	60.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q6	50.0%	46.9%	51.7%	50.0%
		कुल प्रतिशत	5.0%	15.0%	30.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	5	17	28	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.0	16.0	29.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	34.0%	56.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q6	50.0%	53.1%	48.3%	50.0%
		कुल प्रतिशत	5.0%	17.0%	28.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	10	32	58	100
		अपेक्षित आवृत्ति	10.0	32.0	58.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	32.0%	58.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q6	100.0%	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	10.0%	32.0%	58.0%	100.0%

व्याख्या –सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 17 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 28 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि माध्यमिक स्तर पर हर विद्यार्थी के लिए रोजाना कम से कम एक घंटा खेलकूद अनिवार्य होना चाहिए। वहीं 5 विद्यार्थियों ने "**तटस्थ**" श्रेणी का चयन किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कुछ विद्यार्थी इस प्रभाव को मध्यम स्तर तक अनुभव करते हैं।

बालक विद्यार्थियों में 15 ने "**सहमत**" तथा 30 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर हर विद्यार्थी के लिए रोजाना कम से कम एक घंटा खेलकूद अनिवार्य होना चाहिए। वहीं 5 विद्यार्थियों ने "**तटस्थ**" श्रेणी का चयन किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कुछ विद्यार्थी इस प्रभाव को मध्यम स्तर तक अनुभव करते हैं।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान .194 तथा p-value 0.908 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है माध्यमिक स्तर पर हर विद्यार्थी के लिए रोजाना कम से कम एक घंटा खेलकूद अनिवार्य होना चाहिए।

Q7. खेलकूद से विद्यार्थियों में टीम भावना (Teamwork) और नेतृत्व क्षमता (Leadership) का विकास होता है।

सारणी 4.8 : खेलकूद से विद्यार्थियों में टीम भावना और नेतृत्व क्षमता का विकास होने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

			तटस्थ	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	5	10	35	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.5	10.5	34.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	20.0%	70.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q7	45.5%	47.6%	51.5%	50.0%
		कुल प्रतिशत	5.0%	10.0%	35.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	6	11	33	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.5	10.5	34.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	12.0%	22.0%	66.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q7	54.5%	52.4%	48.5%	50.0%
		कुल प्रतिशत	6.0%	11.0%	33.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	11	21	68	100
		अपेक्षित आवृत्ति	11.0	21.0	68.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	11.0%	21.0%	68.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q7	100.0%	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	11.0%	21.0%	68.0%	100.0%

व्याख्या – सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 10 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 35 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि खेलकूद से विद्यार्थियों में टीम भावना (Teamwork) और नेतृत्व क्षमता (Leadership) का विकास होता है। बालक विद्यार्थियों में 11 ने

"**सहमत**" तथा 33 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि खेलकूद से विद्यार्थियों में टीम भावना (Teamwork) और नेतृत्व क्षमता (Leadership) का विकास होता है।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान .197 तथा p-value 0.906 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि खेलकूद से विद्यार्थियों में टीम भावना (Teamwork) और नेतृत्व क्षमता (Leadership) का विकास होता है।

Q8. ग्रामीण विद्यार्थियों के पास खेल के मैदान तो हैं, लेकिन आधुनिक खेल संसाधनों और कोच (Trainer) की कमी है।

सारणी 4.9 : ग्रामीण विद्यार्थियों के पास खेल के मैदान तो हैं, लेकिन आधुनिक खेल संसाधनों और कोच के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

Q8			सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	20	30	50
		अपेक्षित आवृत्ति	18.0	32.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	40.0%	60.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q8	55.6%	46.9%	50.0%
		कुल प्रतिशत	20.0%	30.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	16	34	50
		अपेक्षित आवृत्ति	18.0	32.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	32.0%	68.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q8	44.4%	53.1%	50.0%
		कुल प्रतिशत	16.0%	34.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	36	64	100
		अपेक्षित आवृत्ति	36.0	64.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	36.0%	64.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q8	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	36.0%	64.0%	100.0%

व्याख्या – सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 20 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 30 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों के पास खेल के मैदान तो हैं, लेकिन आधुनिक खेल संसाधनों और कोच (Trainer) की कमी है। बालक विद्यार्थियों में 16 ने

"**सहमत**" तथा 34 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों के पास खेल के मैदान तो हैं, लेकिन आधुनिक खेल संसाधनों और कोच (Trainer) की कमी है।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 0.694 तथा p-value 0.405 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है ग्रामीण विद्यार्थियों के पास खेल के मैदान तो हैं, लेकिन आधुनिक खेल संसाधनों और कोच (Trainer) की कमी है।

Q9. शहरी विद्यार्थियों में खेलकूद की कमी के कारण मोबाइल और स्क्रीन की निर्भरता ज्यादा बढ़ रही है।

सारणी 4.10 : शहरी विद्यार्थियों में खेलकूद की कमी के कारण मोबाइल और स्क्रीन की निर्भरता ज्यादा बढ़ने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

Q9			सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	14	36	50
		अपेक्षित आवृत्ति	13.5	36.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	28.0%	72.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q9	51.9%	49.3%	50.0%
		कुल प्रतिशत	14.0%	36.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	13	37	50
		अपेक्षित आवृत्ति	13.5	36.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	26.0%	74.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q9	48.1%	50.7%	50.0%
		कुल प्रतिशत	13.0%	37.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	27	73	100
		अपेक्षित आवृत्ति	27.0	73.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	27.0%	73.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q9	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	27.0%	73.0%	100.0%

व्याख्या – सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 14 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 36 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि शहरी विद्यार्थियों में खेलकूद की कमी के कारण मोबाइल और स्क्रीन की निर्भरता ज्यादा बढ़ रही है।

बालक विद्यार्थियों में 13 ने "**सहमत**" तथा 37 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यार्थियों में खेलकूद की कमी के कारण मोबाइल और स्क्रीन की निर्भरता ज्यादा बढ़ रही है।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 4.001 तथा p-value 0.135 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यार्थियों में खेलकूद की कमी के कारण मोबाइल और स्क्रीन की निर्भरता ज्यादा बढ़ रही है।

Q10. खेलकूद में बेहतर प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को परीक्षा के अंकों में अतिरिक्त छूट (Grace Marks) मिलनी चाहिए।

सारणी 4.11 : खेलकूद में बेहतर प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को परीक्षा के अंकों में अतिरिक्त छूट मिलने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

Q10			सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	15	35	50
		अपेक्षित आवृत्ति	16.5	33.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	30.0%	70.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q10	45.5%	52.2%	50.0%
		कुल प्रतिशत	15.0%	35.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	18	32	50
		अपेक्षित आवृत्ति	16.5	33.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	36.0%	64.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q10	54.5%	47.8%	50.0%
		कुल प्रतिशत	18.0%	32.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	33	67	100
		अपेक्षित आवृत्ति	33.0	67.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	33.0%	67.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q10	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	33.0%	67.0%	100.0%

व्याख्या – सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 15 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 35 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**"

श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है खेलकूद में बेहतर प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को परीक्षा के अंकों में अतिरिक्त छूट मिलनी चाहिए।

बालक विद्यार्थियों में 18 ने "**सहमत**" तथा 32 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है खेलकूद में बेहतर प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को परीक्षा के अंकों में अतिरिक्त छूट (Grace Marks) मिलनी चाहिए।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 0.407 तथा p-value 0.523 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि खेलकूद में बेहतर प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को परीक्षा के अंकों में अतिरिक्त छूट (Grace Marks) मिलनी चाहिए।

Q.11 खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करती हैं।

सारणी 4.12 : खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

			सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	20	30	50
		अपेक्षित आवृत्ति	21.5	28.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	40.0%	60.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q11	46.5%	52.6%	50.0%
		कुल प्रतिशत	20.0%	30.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	23	27	50
		अपेक्षित आवृत्ति	21.5	28.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	46.0%	54.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q11	53.5%	47.4%	50.0%
		कुल प्रतिशत	23.0%	27.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	43	57	100
		अपेक्षित आवृत्ति	43.0	57.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	43.0%	57.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q11	100.0%	100.0%	100.0%

व्याख्या –सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 23 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 27 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करती हैं।

बालक विद्यार्थियों में 20 ने "**सहमत**" तथा 30 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करती हैं।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 4.001 तथा p-value 0.135 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करती हैं।

Q12. ग्रामीण स्कूलों की तुलना में शहरी स्कूलों में सांस्कृतिक और खेलकूद की बेहतर सुविधाएं (Infrastructure) उपलब्ध हैं।

सारणी 4.13 : ग्रामीण स्कूलों की तुलना में शहरी स्कूलों में सांस्कृतिक और खेलकूद की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

			सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	20	30	50
		अपेक्षित आवृत्ति	19.0	31.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	40.0%	60.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q12	52.6%	48.4%	50.0%
		कुल प्रतिशत	20.0%	30.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	18	32	50
		अपेक्षित आवृत्ति	19.0	31.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	36.0%	64.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q12	47.4%	51.6%	50.0%
		कुल प्रतिशत	18.0%	32.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	38	62	100
		अपेक्षित आवृत्ति	38.0	62.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	38.0%	62.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q12	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	38.0%	62.0%	100.0%

व्याख्या –सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 18 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 32 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि ग्रामीण स्कूलों की तुलना में शहरी स्कूलों में सांस्कृतिक और खेलकूद की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हैं।

बालक विद्यार्थियों में 20 ने "**सहमत**" तथा 30 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है ग्रामीण स्कूलों की तुलना में शहरी स्कूलों में सांस्कृतिक और खेलकूद की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हैं।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 0.170 तथा p-value 0.680 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण स्कूलों की तुलना में शहरी स्कूलों में सांस्कृतिक और खेलकूद की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हैं।

Q13. माता–पिता और शिक्षक खेलकूद या सांस्कृतिक गतिविधियों की तुलना में केवल किताबी पढ़ाई को ज्यादा महत्व देते हैं।

सारणी 4.14 : माता–पिता और शिक्षक खेलकूद या सांस्कृतिक गतिविधियों की तुलना में केवल किताबी पढ़ाई को ज्यादा महत्व देने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

			सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	5	45	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.0	45.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	90.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q13	50.0%	50.0%	50.0%
		कुल प्रतिशत	5.0%	45.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	5	45	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.0	45.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	90.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q13	50.0%	50.0%	50.0%
		कुल प्रतिशत	5.0%	45.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	10	90	100
		अपेक्षित आवृत्ति	10.0	90.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	90.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q13	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	10.0%	90.0%	100.0%

व्याख्या –सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 5 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 45 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि माता–पिता और शिक्षक खेलकूद या सांस्कृतिक गतिविधियों की तुलना में केवल किताबी पढ़ाई को ज्यादा महत्व देते हैं।

बालक विद्यार्थियों में 5 ने "**सहमत**" तथा 45 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है माता–पिता और शिक्षक खेलकूद या सांस्कृतिक गतिविधियों की तुलना में केवल किताबी पढ़ाई को ज्यादा महत्व देते हैं।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 0.000 तथा p-value 1.000 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि माता–पिता और शिक्षक खेलकूद या सांस्कृतिक गतिविधियों की तुलना में केवल किताबी पढ़ाई को ज्यादा महत्व देते हैं।

Q14. इन गतिविधियों को अनिवार्य करने से विद्यार्थियों के तनाव और अवसाद (stress & Depression) को कम किया जा सकता है।

सारणी 4.15 : इन गतिविधियों को अनिवार्य करने से विद्यार्थियों के तनाव और अवसाद को कम करने के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

			सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	16	34	50
		अपेक्षित आवृत्ति	15.5	34.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	32.0%	68.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q14	51.6%	49.3%	50.0%
		कुल प्रतिशत	16.0%	34.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	15	35	50
		अपेक्षित आवृत्ति	15.5	34.5	50.0
		लिंग में प्रतिशत	30.0%	70.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q14	48.4%	50.7%	50.0%
		कुल प्रतिशत	15.0%	35.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	31	69	100
		अपेक्षित आवृत्ति	31.0	69.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	31.0%	69.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q14	100.0%	100.0%	100.0%

व्याख्या –सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 15 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 35 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि इन गतिविधियों को अनिवार्य करने से विद्यार्थियों के तनाव और अवसाद (stress & Depression) को कम किया जा सकता है।

बालक विद्यार्थियों में 16 ने "**सहमत**" तथा 34 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि इन गतिविधियों को अनिवार्य करने से विद्यार्थियों के तनाव और अवसाद (stress & Depression) को कम किया जा सकता है।

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 0.047 तथा p-value 0.829 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इन गतिविधियों को अनिवार्य करने से विद्यार्थियों के तनाव और अवसाद (stress & Depression) को कम किया जा सकता है।

Q15. भविष्य में करियर बनाने के लिए खेल और कला(Arts) भी पारंपरिक विषयों जितने ही महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

सारणी 4.16 : भविष्य में करियर बनाने के लिए खेल और कला भी पारंपरिक विषयों जितने ही महत्वपूर्ण हैं के संबंध में लिंग आधारित प्रतिक्रियाओं का क्रॉस–टैबुलेशन विश्लेषण

			सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
लिंग	बालक	अवलोकित आवृत्ति	5	45	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.0	45.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	90.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q15	50.0%	50.0%	50.0%
		कुल प्रतिशत	5.0%	45.0%	50.0%
	बालिका	अवलोकित आवृत्ति	5	45	50
		अपेक्षित आवृत्ति	5.0	45.0	50.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	90.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q15	50.0%	50.0%	50.0%
		कुल प्रतिशत	5.0%	45.0%	50.0%
कुल		अवलोकित आवृत्ति	10	90	100
		अपेक्षित आवृत्ति	10.0	90.0	100.0
		लिंग में प्रतिशत	10.0%	90.0%	100.0%
		अनुक्रिया में प्रतिशत Q15	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल प्रतिशत	10.0%	90.0%	100.0%

व्याख्या –प्रस्तुत सारणी से यह विश्लेषण दर्शित होता है। कि "भविष्य में करियर बनाने के लिए खेल और कला(Arts) भी पारंपरिक विषयों जितने ही महत्वपूर्ण माध्यम हैं।" इस कथन पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का लिंग के आधार पर विश्लेषण किया गया। अध्ययन में कुल 100 प्रतिभागियों को सम्मिलित किया गया, जिनमें 50 बालक विद्यार्थी तथा 50 बालिका विद्यार्थी प्रतिभागी थें। जिसमे नीला रंग सहमत एवं हरा रंग पूर्णतः सहमत को प्रदर्शित करते है।

सारणी के अनुसार अधिकांश बालिका विद्यार्थियों ने इस कथन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुल 5 विद्यार्थियों ने "**सहमत**" श्रेणी तथा 45 विद्यार्थियों ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया, जो यह संकेत करता है कि भविष्य में करियर बनाने के लिए खेल और कला(Arts) भी पारंपरिक विषयों जितने ही महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

बालक विद्यार्थियों में 5 ने "**सहमत**" तथा 45 ने "**पूर्णतः सहमत**" श्रेणी का चयन किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि भविष्य में करियर बनाने के लिए खेल और कला(Arts) भी पारंपरिक विषयों जितने ही महत्वपूर्ण माध्यम हैं।"

काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार प्राप्त χ^2 मान 0.000 तथा p-value 1.000 पाई गई, जो 0.05 के स्तर से अधिक है। अर्थात् बालक एवं बालिका विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं में सांख्यिकीय रूप से कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भविष्य में करियर बनाने के लिए खेल और कला भी पारंपरिक विषयों जितने ही महत्वपूर्ण माध्यम हैं।"

अतः अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भविष्य में करियर बनाने के लिए खेल और कला भी पारंपरिक विषयों जितने ही महत्वपूर्ण माध्यम हैं।"

4.3 परिकल्पना और निष्कर्षों का सत्यापन– प्रस्तुत अध्ययन में ''ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन किया गया। शोध अध्ययन से उपलब्ध काई–स्क्वायर (Chi-Square) परीक्षणों में सभी p-value 0.05 से अधिक प्राप्त हुई हैं, अतः किसी भी परिकल्पना के समर्थन में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर सिद्ध नहीं हुआ।

परिकल्पना H_1–"ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यार्थियों के मध्य सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता के संबंध में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता से संबंधित विभिन्न प्रश्नों (Q1 से Q5) पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का काई–स्क्वायर परीक्षण किया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता के संबंध में विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं में सांख्यिकीय रूप से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना H_1 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना H_2– "ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यार्थियों के मध्य खेलकूद की अनिवार्यता के संबंध में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

खेलकूद की अनिवार्यता एवं उसके महत्व से संबंधित प्रश्नों (Q6 से Q8) के आधार पर काई–स्क्वायर परीक्षण किया गया। उपलब्ध परीक्षण परिणामों में प्राप्त p-value 0.908, 0.906 तथा अन्य मान भी 0.05 से अधिक पाए गए। इससे स्पष्ट होता है कि खेलकूद की अनिवार्यता के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना H_2 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना H_3 –"माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में खेलकूद तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के संबंध में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रभाव से संबंधित प्रश्नों के विश्लेषण में प्राप्त काई–स्क्वायर परीक्षणों के p–मूल्य 0.05 से अधिक पाए गए। इससे स्पष्ट है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थी खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति लगभग समान दृष्टिकोण रखते हैं। अतः परिकल्पना H_3 अस्वीकृत की जाती है।

अध्याय पंचम

सारांश, परिणाम एवं सुझाव

5.0 प्रस्तावना – एक संक्षिप्त परिचय और समस्या का विवरण शामिल हो सकता है। इसके बाद उद्देश्यों का विवरण, परिकल्पनाओं की सूची, और उपयोग की गई कार्यप्रणाली का वर्णन हो सकता है। जिसमें अवलोकन की विभिन्न इकाइयाँ, अलग–अलग उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करके एकत्र किए गए डेटा का प्रकार, और डेटा का विश्लेषण शामिल होता है। इसके बाद मुख्य निष्कर्ष, परिणाम और निहितार्थ बताए जा सकते हैं। सारांश में सभी प्रारंभिक सामग्री, रिपोर्ट का संक्षिप्त मुख्य भाग, और रिसर्च के निष्कर्षों के विस्तृत निहितार्थ शामिल होते हैं। इस लिहाज से, सारांश रिसर्च रिपोर्टिंग को साझा करने का उद्देश्य पूरा करता है, जबकि मुख्य रिपोर्ट सभी अकादमिक आवश्यकताओं को पूरा करती है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, यह एक सारांश है। इसलिए, इसमें रिसर्च के पीछे के तर्क के बजाय उसके परिणामों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है।

5.1 सारांश– 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता' एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शोध अध्ययन ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों और खेलकूद की अनिवार्यता, महत्व तथा स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रति उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है। शोध में निर्धारित तीन मुख्य परिकल्पनाओं का परीक्षण 0.05 सार्थकता स्तर पर काई–स्क्वायर सांख्यिकीय तकनीक के माध्यम से किया गया।

भौगोलिक परिवेश ग्रामीण व शहरी और लैंगिक विभिन्नता छात्र व छात्राएं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सोच को प्रभावित नहीं करते हैं। सभी श्रेणियों के छात्र खेलकूद तथा सांस्कृतिक गतिविधियों की उपयोगिता, जीवन में इनकी अनिवार्यता, और व्यक्तित्व व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले इसके सकारात्मक प्रभावों के प्रति एक समान तथा रचनात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। सांख्यिकीय रूप से शून्य परिकल्पनाओं के स्वीकार होने का यह परिणाम यह संकेत देता है कि आधुनिक समय में सूचना और जागरूकता के प्रसार के कारण अब दोनों ही क्षेत्रों के विद्यार्थियों में इन सह–शैक्षणिक गतिविधियों के महत्व को लेकर पूरी तरह से वैचारिक समानता आ चुकी है।

5.2 परिणाम—प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य परिणाम निम्नलिखित हैं:—

1. सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता के परिणाम p-value का मान प्रश्नावली के प्रश्न Q1 से Q5 पर प्राप्त p-value क्रमशः 0.135, 0.839, 0.422, 0.540 और 0.908 रहे। अतः सभी p-value का मान निर्धारित सार्थकता स्तर (0.05) से अधिक पाया गया। निष्कर्षतः ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं में सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता को लेकर कोई सांख्यिकीय अंतर नहीं है। इस आधार पर परिकल्पना H_1 अस्वीकृत की जाती है।

2. खेलकूद की अनिवार्यता से संबंधित परिणाम p-value का मान खेलकूद के महत्व और अनिवार्यता से जुड़े प्रश्नों (Q6 से Q8) के काई—स्क्वायर परीक्षण में p-value 0.908, 0.906 तथा अन्य मान भी 0.05 से अधिक प्राप्त हुए। अतः प्राप्त आंकड़े सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर प्रदर्शित करने में विफल रहे। निष्कर्षतः खेलकूद के प्रति ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में समानता है। इस आधार पर परिकल्पना H_2 अस्वीकृत की जाती है।

3. स्वास्थ्य और व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव के परिणाम p-value का मानः खेलकूद व सांस्कृतिक गतिविधियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित परीक्षणों में भी सभी p-value 0.05 से अधिक दर्ज किए गए। अतः छात्र और छात्राओं की प्रतिक्रियाओं में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं मिला। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राएं दोनों ही इन गतिविधियों के स्वास्थ्य और व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव के प्रति समान दृष्टिकोण रखते हैं। इस आधार पर परिकल्पना H_3 अस्वीकृत की जाती है।

5.3 निष्कर्ष — प्रस्तुत शोध अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सांस्कृतिक गतिविधियों और खेलकूद की अनिवार्यता को लेकर कोई महत्वपूर्ण सांख्यिकीय अंतर नहीं है। प्रश्नावली के विभिन्न प्रश्नों (Q1 से Q5) पर प्राप्त सभी p-values का मान निर्धारित सार्थकता स्तर (0.05) से अधिक होने के कारण यह स्पष्ट होता है कि दोनों परिवेशों के विद्यार्थी सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्व को एक समान रूप से स्वीकार करते हैं, जिसके आधार पर प्रथम परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इसी प्रकार, खेलकूद की अनिवार्यता एवं महत्ता से जुड़े प्रश्नों (Q6 से Q8) के काई—स्क्वायर परीक्षण में भी p-value का मान 0.05 से अधिक पाया गया, जो यह दर्शाता है कि खेलकूद के प्रति ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सोच और दृष्टिकोण

में पूरी समानता है तथा इस आधार पर द्वितीय परिकल्पना भी अस्वीकृत की जाती है। समग्र रूप से यह अध्ययन प्रमाणित करता है कि क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) या लिंग के भेद मूलक प्रभावों से परे, माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थी सांस्कृतिक व खेलकूद गतिविधियों को अपने जीवन और शिक्षा का एक अनिवार्य व अभिन्न अंग मानते हैं।

5.4 सुझाव– इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि ज्यादातर मामलों में सांस्कृतिक गतिविधियों और खेलकूद का छात्रों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव हीं पड़ता है। अतः इस अध्ययन के व्यावहारिक सुझाव निम्नलिखित हैंः–

1. माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक गतिविधियों और खेलकूद को केवल वैकल्पिक न रखकर मुख्य विषयों की तरह अनिवार्य क्रेडिट या अंक प्रणाली से जोड़ा जाना चाहिए।

2. ग्रामीण छात्र भी खेलकूद को महत्वपूर्ण मानते हैं, इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में शहरी स्कूलों की तर्ज पर खेल मैदान, खेल सामग्री और कोच की तुरंत व्यवस्था की जानी चाहिए।

3. सभी विद्यालयों में प्रतिदिन या सप्ताह में कम से कम तीन दिन खेलकूद और सांस्कृतिक अभ्यास के लिए समय–सारणी में विशेष और अनिवार्य कालश निर्धारित होने चाहिए।

4. शिक्षा विभागों द्वारा स्कूलों को दिए जाने वाले वार्षिक बजट में सांस्कृतिक और खेलकूद गतिविधियों के लिए एक निश्चित और पर्याप्त राशि आवंटित की जानी चाहिए, ताकि संसाधनों की कमी न आए।

5. छात्र और छात्राएं दोनों इसके महत्व को समान मानते हैं, अतः स्कूलों में छात्राओं के लिए भी कुश्ती, फुटबॉल या क्रिकेट जैसे खेलों और सांस्कृतिक मंचों पर समान रूप से भाग लेने के सुरक्षित अवसर और प्रोत्साहन मिलने चाहिए।

6. ग्रामीण और शहरी निकायों (जैसे ग्राम पंचायत और नगर निगम) को स्थानीय स्कूलों के साथ मिलकर अंर्त–विद्यालयी खेल और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन नियमित रूप से कराना चाहिए।

7. शिक्षक–अभिभावक बैठकों में माता–पिता को काउंसिलिंग के जरिए यह समझाया जाए कि खेल और कलाएं बच्चों की पढ़ाई में बाधा नहीं, बल्कि उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य हैं।

5.6 अनुकरणीय अध्ययन —शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन सीमित समय अंतराल के कारण लघु न्यादर्श पर किया गया है अतः यह अध्ययन विस्तृत न्यादर्श पर किया जा सकता है एवं परिणामों की जांच की जा सकती कुछ प्रमुख अध्ययन इस प्रकार हैं—

1. जिला स्तर से बढ़ाकर राज्य या राष्ट्रीय स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन''

2. कक्षा 9वीं से 12वीं के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद के दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

3. सीबीएसई, आईसीएसई और राज्य बोर्ड के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद के दृष्टिकोण पर एक अध्ययन।

4. सरकारी और निजी माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थियों के बीच इन सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता का तुलनात्मक अध्ययन।

5. खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों (शैक्षणिक ग्रेड) पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

6. खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता का विद्यार्थियों के अवसाद, तनाव और चिंता के स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

7. ग्रामीण और शहरी अभिभावकों के दृष्टिकोण और उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर का इन गतिविधियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

8. स्कूलों में खेल के मैदान और उपकरणों की उपलब्धता का विद्यार्थियों की भागीदारी दर पर प्रभाव का अध्ययन।

9. मोबाइल/इंटरनेट के उपयोग और विद्यार्थियों की शारीरिक खेल गतिविधियों में घटती रुचि के अंतर्संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

10. व्यक्तिगत खेलों (जैसे– शतरंज, एथलेटिक्स) बनाम टीम खेलों (जैसे– क्रिकेट, फुटबॉल) का व्यक्तित्व विकास पर तुलनात्मक प्रभाव।